कामेत-इटावा(उ.प्र.)। सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति। साथ हैं कैबिनेट मंत्री शिवपाल यादव।

फतेहाबाद-हरियाणा। विधायक चौधरी बलवान सिंह दौलतपुरिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. जीवन।

कलायत-हरियाणा। एस.डी.एम. ओमप्रकाश देवरला को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। ए.सी.जे.एम. राकेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. राजपाल व अन्य।

हाजीपुर-विहार। अखिलेश कुमार जैन,डिस्ट्रीक्ट जज,वैशाली को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली। साथ हैं ब्र.कु. आरती।

डेरापुर-उ.प्र.। एस.ओ. शिवाकान्त शुक्ला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रीति। साथ हैं ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. प्रियंका।

निरंतर अभ्यास द्वारा ही अंतकाल में परमात्मा की याद संभव

गतांक से आगे...

अर्जुन फिर प्रश्न पूछता है कि मृत्यु के समय आत्म संयम द्वारा अपने आपको कैसे जान सकते हैं?

भगवान कहते हैं कि जिसने जीवन भर जो अभ्यास किया हो, उसे अंतकाल में वही स्मृति आती है, वही बातें याद आती हैं और जो अ-तकाल में मेरी स्मृति में रहकर देह त्याग करता है, वह मेरे सानिध्य में आ जाता है। इसलिए विशेष करके जब लोग अंतिम घड़ियों में होते हैं, शरीर छोड़ने पर होते हैं तो उन्हें गीता सुनाते हैं ताकि दो वचन भी उनके कानों में जाये और वो परमात्मा की स्मृति में देह त्यागे ताकि वो परमात्मा के सानिध्य में जाये।

लेकिन जिस व्यक्ति ने जीवनभर परमात्मा का नाम नहीं लिया हो, उसके कानों के पास कोई बैठकर गीता पढ़े भी या भगवान की स्मृति दिलाये भी, तो भी क्या वो स्मृति आयेगी.... ? क्योंकि किसी भी चीज़ की स्मृति तभी आती है जब निरंतर अभ्यास किया हुआ होता है। इसीलिए तो बचपन से लेकर बच्चों में कई संस्कार डालने का उसको अभ्यास क-राते हैं। भगवान के सामने ले जायेंगे और कहेंगे हाथ जोड़ो, जय-जय करो, नमस्ते करो, ये संस्कार डालने की बात है। अगर बचपन से ही ये संस्कार उसके अंदर आ गये तो फिर बड़े होकर भी ये संस्कार बने रहेंगे। क्योंकि स्वयं भगवान ने ये गीता में कहा है कि जो अंतिम समय शरीर छोड़ते वक्त मेरी स्मृति में रहकर देहत्याग करता है, वह मेरे सानिध्य में आ जाता है।

इसलिए हे अर्जुन! तुम हर समय मेरी स्मृति में रहकर युद्ध करो यानी संघर्ष करो। जीवन एक संघर्ष है, हर वक्त इंसान को युद्ध करते रहना पड़ता है। कभी कौनसी चीज़ों से युद्ध करना है, कभी कौन सी परिस्थितियों से युद्ध करना है, कभी कोई समस्याओं से युद्ध करना पड़ता है, लेकिन हर वक्त संघर्ष करते भी अ ा र

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

परमात्मा की स्मृति को कायम बना लें तो अन्त मते सो गति हो जाएगी। लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये दुर्जेय शत्रु हैं। ये दुर्जेय शत्रु परमात्म स्मृति में रहने नहीं देंगे। उसी समय माया भी बाधा के रूप में प्रत्यक्ष उद्भव होती है। लेकिन फिर भी जो निरंतर इस अभ्यास में रहते हुए स्मृति स्वरूप बनते हुए हर कर्म करता है, वो परमात्मा के सानिध्य में जा सकता है और फिर भगवान अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय देते हैं।

हे अर्जुन! मैं सर्वज्ञ हूँ अर्थात मैं सब कुछ जानता हूँ, ज्ञाता हूँ, अनादि नियंता हूँ, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सबके आधारमूर्त, दिव्य प्रकाश स्वरूप, अशरीरी, जो श्रीकृष्ण के रूप में अर्जुन देख रहा था, वो परमात्मा नहीं था। इसीलिए परमात्मा पुन: अपना स्वरूप स्पष्ट करते हैं कि हे अर्जुन! मैं सर्वज्ञ हूँ, सब कुछ जानने वाला हूँ, तभी तो कहा कि महाभारत के युद्ध के पहले स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर की पूजा की। आज भी कुरुक्षेत्र के मैदान में थानेश्वर का मंदिर है, शिव का मंदिर है कि जहाँ दिखाते हैं कि स्वयं श्रीकृष्ण ने भी पूजा की और पांडव से भी करायी।

वृंदावन चले जाओ वहां गोपेश्वर का मंदिर है। जहाँ दिखाते हैं कि बचपन से ही श्रीकृष्ण ने गोपों के साथ मिल करके शिव की पूजा की। वो परमात्मा जिसकी पूजा देवताओं ने भी की। रामेश्वरम् में श्रीराम ने भी शिव की पूजा की। क्योंकि रावण से युद्ध करना था। रावण जिसको अपनी शक्ति पर इतना घमंड था। वह ऐसे ही घमंड नहीं कर रहा था। क्योंकि रावण भी शिव भक्त था। उसने शिव से वो शक्ति प्राप्त की हुई थी इसलिए उसको इतना घमंड था कि कोई मुझे हरा नहीं सकता। इसीलिए स्वयं श्रीराम ने भी सबसे पहले शिव की पूजा की, उसके बाद रावण के साथ युद्ध करके उसके ऊपर विजयी हुए। अगर वे महादेव की शक्ति को प्राप्त नहीं करते, तो रावण के ऊपर विजय प्राप्त करना असंभव हो जाता । इसीलिए उनको कहा जाता है - ''देवों का भी देव महादेव'' और महादेव अपना स्वरूप स्पष्ट करते हैं कि हे अर्जुन! मुझे अपना कोई शरीर नहीं है। मैं अशरीरी हूँ। तब अर्जुन के सामने ये बात पुन: आती है, ध्यान अर्थात परमात्मा के उस निराकार, अशरीरी रूप में मन को स्थिर करना है। उसके बारे में फिर से स्पष्ट करते हैं। - क्रमश:

रास्ते हैं तो ... - पेज 2 का शेष...

द्वंद्व खो जाए।

जहाँ सुख-दु:ख दोनों खो जाते हैं, उसी घड़ी को हमने आनंद कहा है, उसी घड़ी को हमने शांति कहा है, उसी घड़ी को हमने मुक्ति कहा है। मुक्ति का अर्थ है द्वंद्व से बाहर। जहाँ दो नहीं दबाते, जहाँ दोनों तरफ से विपरीत आपको नहीं करते। जहाँ विपरीत आपको खीचते नहीं। जहाँ किनारे खो जाते हैं और नदी सागर में लीन हो जाती है। किनारों के सहारे ही सही, लेकिन नदी सागर तक आती है। इसलिए किनारे मित्र हैं और सागर तक उनका उपयोग करना है। लेकिन किनारे इतने पक्के मित्र नहीं हैं कि सागर में गिरने से आप रुक जाओ और किनारों को पकड़ कर ठहर जाओ।

तो निसर्ग(प्रकृति) का सम्मान, जीवन का सम्मान और जीवन के नियमों का समझपूर्वक उपयोग। यहाँ हमें प्रकृति का आधार लेना है, वह साधन है। लेकिन साधन की समझ और उसी के सानिध्य में रहकर, समझपूर्वक उसका उपयोग करें। तब ही हम मुक्ति की मंज़िल में प्रवेश कर पायेंगे जहाँ आनंद ही आनंद होगा।

मंगोलिया। इंडियन एम्बेसी में एम्बेसडर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. हेलन,मलेशिया।

ख़्यालों के आईने में...

जीवन में तक्लीफ़ उसी को आती है, जो हमेशा जवाबदारी उठाने को तैयार रहते हैं और जवाबदारी लेने वाले कभी हारते नहीं, या तो जीतते हैं, या फिर सीखते हैं।

प्रेम वो अमृत की धारा है, जो इंसान को कभी मुरझाने नहीं देता और नफ़रत वो आग है जो इंसान को कभी खिलने नहीं देता।

हम इंसान हमेशा यह चर्चा करते और सोचते हैं कि भगवान है या नहीं, लेकिन कभी यह नहीं सोचा कि हम इंसान भी हैं या नहीं।